'मैला आँचल' और 'परती : परिकथा' में चित्रित संस्कृति

डॉ. अंजनाबहन वी. गरोड़

१. प्रस्तावना

फणीश्वरनाथ 'रेणु' जी के उपन्यास 'मैला आँचल' एवं 'परती : परिकथा' में कृषक एवं ग्रामीण का चित्रण मिलता है। भारतीय संस्कृति का मूल एवं उसका सच्चा स्वरूप हमें ग्रामीण-जीवन में देखने को मिलता है। संस्कृति के अंतर्गत वे सभी काम करने, सोच-विचार, रहन-सहन के तौर-तरीके आदि का वर्णन मिलता है। संस्कृति नगर सभ्यता का केन्द्र है जो कृषक जीवन तथा आँचलिक जीवन की पहचान करवाता है। हमारा भारतदेश संस्कृति से भरा है। यहाँ अलग-अलग समाज की संस्कृति अपनी-अपनी पहचान बनाती है।

हमारे देश में मेले, त्यौहार जैसे सांस्कृतिक पर्वों की प्रथा है। जो किसी विशिष्ट त्यौहार से नहीं है। इसे त्यौहार कम नहीं है। इसे त्यौहार और सामूहिक उत्सव भी कहा जाता है। मेलों में ग्रामीण जनता बड़े हर्ष उल्लास से अपना योगदान देती है और विविध कलाओं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग्य आजमाते हैं। ग्राम्य जीवन का सबसे सुखद त्यौहार मेला, लोक-उत्सव आदि है। साल भर वे खेत-मजदूरी करते है, फिर भी साल के छः महीने किसी-न-किसी उत्सव में रसलीन होते हैं। होली के एक महीने पहले से एक महीना बाद तक फाग उड़ती है।

'रेणु' जी ने परानपुर गाँव में शामा-चकवा का पर्व पूर्णमासी की रात को मिट्टी के शामा-चकवा के पुतले बनाकर कुमारियों द्वारा मनाया जाता है। तो मेरीगंज अंचल में चैत्र संक्रांति, बैशाख के पहले दिन सामूहिक रूप से मछली का शिकार करके सिखा पर्व मनाने की रीति है। देखा जाए तो 'रेणु' जी के इन उपन्यासों में सांस्कृतिक अवसरों के मूल अंग मेले, त्यौहारों का सूक्ष्म, सजीव, स्वाभाविक और जीवंत चित्रण देखने को मिलता है। सांस्कृतिकता की इस धारा को न गरीबी रोक सकती है, न ही दुःख-दर्द। ये त्यौहार-पर्व कृषक समाज को एक दृढ़ श्रृंखला में जकड़े रखते हैं। इस त्यौहारों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि इसके प्रति ग्राम्य समाज का लगाव सदा बढ़ता रहा है।

इन उपन्यासों में जहाँ और सांस्कृतिक पर्व में ग्राम्य समाज के असीम आस्था और विश्वास परिलिक्षित होते हैं वहाँ दूसरी और उसमें ग्राम्य समाज की उठ रही आस्था को भी भूला नहीं जा सकता। जिसके परिणाम स्वरूप सांस्कृतिक पर्व आनंद-उल्लास के स्थान पर अनैतिकता का पर्याय बनता जा रहा है।

परती : परिकथा के परानपुर गाँव के जमीन के परानपुर गाँव में जमीन में झगड़े के कारण पर्व-त्यौहार मानाने बंद हो गए है। नोजवान मेले-उत्सव को रूढ़ि-ग्रस्त समाज की बेवकूफी समझते है तो बूढ़े इसे फिजुलखर्ची मानते है। संक्षेप में अगर देखा जाए तो सामाजिक, विघटन लोगों की अर्धमूलक दृष्टी, शहरोन्मुखता, शिक्षा के प्रसार, राजनितीक प्रभाव, मूल्यानुसंक्रमण, वैज्ञानिक सभ्यता के प्रभाव, बेकारी, धार्मिक आस्थाओं के विघटन एवं मानासिक बदलाव के कारण ग्राम्य-जीवन की सांस्कृतिक प्रथाएँ टूट रही है तथा असंगतियों से भर गई है। पुरानी सांस्कृतिक नष्ट होती जा रही है, किन्तु नई संस्कृति उसका स्थान श्रेणी ग्रहण कर पा रही है। ऐसी परिस्थितियों के बावजूद भी ग्राम्य-समाज अनेक कथाओं के विवरण प्रस्तुत हुए है।

'रेणु' के मेरीगंज अंचल में अनेक लोक-कथाएँ प्रचलित हैं। जैसे सुरंगा-सुदाबिज की कथा, कुमर-विज्जेमान की कथा, लोरिका की कथा, कमला मैया (नदी) की कथा, कौसी-कैथ की कथा आदि। तंत्रिमा टोली में सुरंगा-सदाब्रिज की कथा हो रही है। मँहूगदास के घर के पास लोग जमा है। सुरंगा-सदाब्रिज की कथा-प्रसंग में सदाब्रिज पर आसक्त स्त्री कहती है-

"सासू मोरी मरे हो, मरे मोरी बाहिनी से,
मरे ननद जेठ मोर जी !
मरे हमार सब कुछ पकिवखा से,
फासी गई की परेह के डोर जी ।"

इतना कहकर वह सदाब्रिज के पास आई और पानी पिलाकर प्रेम की बाते करने लगी। गाँव के लोग सुनने में इतने लीन है कि स्त्रियों के पारस्परिक झगड़े भी उनका ध्यान चकित नहीं कर पाते।

'परती : परिकथा' का परानपुर गाँव में कोसी मैया की कथा, बदरिया घाट की कथा, कोहबर राँडी की कथा, सुन्नरी नैका, शामा-चकेवा आदि लोक-कथाएँ प्रचलित हैं। इनके अलावा सुरंगा-सदाब्रिज, घेरिलसिंह घुघली-घटवार, कुमार-विज्जेमान, दाला मारू, चन्नियाँ आदि गीत-कथाएँ भी वहाँ प्रचलित हैं। इस उपन्यास का प्रथम कथानक इस धरती से संबंधित लोक प्रचलित दंतकथा कोसी मैया की कथा पर आधारित है। परती की अंतहीन कहान की यह परिकथा बूढ़ा मेंसवार कहता है। तो रघू रामायनी सुन्नरी नैका-कथा प्रमुख एवं विशिष्ट वाचक है। यह कथा कुण्ड-खुदाई की असली कथा है। यह गीतों भरी कहानी तो रघू को सपने में मिली थी। जिसे सुनाते-सुनाते रामायनी की आँखों से आँसू टपकते हैं तथा उसकी सफ़ेद दाढ़ी भीग जाती है। इतना ही नहीं, इस कथा को सुनकर तो स्त्रियाँ बेहोश हो जाती हैं।

'रेणु' जी ने 'मैला आँचल' के मेरीगंज गाँव में होने वाले विविध नृत्यों के बड़ा जीवंत रूप प्रस्तुत किया है। मेरीगंज में खम्हारा खुलने के अवसर पर तहसीलदार 'बिदापत नाच' का आयोजन करते हैं। हर साल इस अवसर कुछ न कुछ होता है। पिछले साल जालिसिंह का नाच हुआ था। इस बार बिदापत नाच होगा। बिदापत नाच मिथिला की ग्राम-संस्कृति का अभिन्न अंग है। गाँव-गाँव में रात में जबकि किसानों को फुरसत होती है, बिदापत का नाच होता है। बिदापत नाच में भदेरापन तो बहुत होता है, पर उसमें ग्रामीण जीवन की आत्मा गूँजती है। इसके अतिरिक्त इस अंचल में ठेठर कंपनी नाच, विदेसिया-नाच, बलचारी नाच, संथाली-नाच, बिहाल नाच आदि प्रचलित हैं, जिनके द्वारा जीवन की आलोचना तथा किसान-मजदूरों अपने शोषण के प्रति विशेष भाव भी अभिव्यक्त होता है। 'परती : परिकथा' में भी लोक-नृत्य दृष्टिगोचार होता है।

२. उपसंहार

इस प्रकार 'रेणु' जी के इन उपन्यासों में सांस्कृतिक पक्ष का महत्त्व रहता है। जिसमें त्यौहार उत्सव, लोकगीत, लोककथाएँ, लोक-नृत्य, कथावार्ता, कीर्तन, मेलाँ, होली आदि का सचेत चित्रण मिलता है। इस पक्ष के कारण उपन्यासों में जीवन्तता एवं चित्रात्मकता आती है। 'रेणु' जी कला लोक-रस की धारा से आकंठ छकी हुई है। यह धारा यह प्रमाणित करती है कि जीवन बिलकुल नीरस नहीं गया है, बल्कि उसकी प्राणवता अब भी कायम है।

सन्दर्भ ग्रंथ

१. परती : परिकथा, फणीश्वरनाथ 'रेणु'
२. मैला आँचल, फणीश्वरनाथ 'रेणु'
३. कथाकार फणीश्वरनाथ 'रेणु', डॉ. चंद्रभानु सोनवणे